International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

बौद्ध धर्म का उद्भव और प्रचार–प्रसार में सम्राट अषोक का योगदान

डॉ. राकेष कुमार
इतिहास विभाग।

शोध आलेख सार

सम्राट अषोक एक ऐसे महापुरूष हैं जिन्हं भारत और विष्व इतिहास में बौद्ध धर्म में अनुयायी और महान प्रचारक का स्थान प्राप्त है। सम्राट अषोक एक महान योद्धा भी था। कलिंग विजय इसका प्रमाण है। उस युद्ध में भयंकर रक्तपात को देखकर अषोक द्रवित हो गया तथा हिंसा और युद्ध नीति का सदा के लिये त्याग कर दिया। युद्ध के बाद बौद्ध धर्म अपना लिया और अपना सारा जीवन बौद्ध धर्म को समर्पित कर दिया। इसी कारण विष्व इतिहास में महान स्थान प्राप्त है। अषोक की बौद्ध धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा थी। उसने बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए अनेक कार्य किये जिसके कारण यह धर्म देष–विदेष में लोकप्रिय हो गया।

मूल शब्द : बौद्ध धर्म, इतिहास, कलिंग विजय, रक्तपात।

भूमिका

बौद्ध धर्म की स्थापना महात्मा बुद्ध ने की थी। ये शाक्य वंषीय राजकुमार थे। इनकी सांसारिक मोह–माया में कोई रुचि नहीं थी। अतः इन्होंने सच्चे ज्ञान की प्राप्ति के लिये गृहस्थ जीवन से संयास ले लिया। 49 दिन की घोर तपस्या के बाद बिहार के गया में वह वृक्ष के नीचे इन्हें सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हुई। और सिद्धार्थ 'बुद्ध' कहलाये। सारनाम में इन्होंने अपना प्रथम

उपदेष दिया। गृह त्याग महाभिनिष्क्रमण' और प्रथम उपदेष 'धर्म चक्र प्रवर्तन' कहलाया। अपना शेष जीवन बौद्ध धर्म के प्रचार और प्रसार में लगा दिया। बाद में बौद्ध भिक्षुओं और सम्राट अषोक जैसे उत्साही शासकों के प्रयासों से बौद्ध धर्म भारत ही नहीं, अपितु विदेषों में भी लोकप्रिय हो गया।

शोध प्रविधि

यह शोध पत्र द्वितीय आंकड़ों पर आधारित है। इतिहास विषय की संदर्भ पुस्तकों से शोध सामग्री एकत्रित की गई है। शोध पत्र के लिये ऐतिहासिक शोध विधि का प्रयोग करते हुए शोध सामग्री को व्यवस्थित किया गया है।

शोध के उद्देष्य

शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देष्य हैं :–

- क्र भारत में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन।
- क्र बौद्ध के प्रचार–प्रसार में सम्राट अषोक का योगदान जानना।
- क्र सम्राट अषोक के धर्म की आज के समय में महत्व को समझना।

बौद्ध धर्म का विकास

भारत में पर्याप्त मात्रा में बौद्ध साहित्य उपलब्ध है। जैसे त्रिपिटक, जाटथ कथाएं और बाद में बौद्ध विद्वानों द्वारा लिखा गया प्रचुर और समृद्ध बौद्ध साहित्य। बौद्ध धर्म व बौद्ध साहित्य के विकास में बौद्ध संगीतियों का अहम स्था है जो विभिन्न सम्राटों के समय पर सम्पन्न हुई। ये चार संगीतियां पांचवीं सदी पूर्व से 7 सदी के मध्य सम्पन्न हुई। इनमें जहां इन त्रिपिटकों की रचना हुई, वहीं पर बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार व बौद्ध संघ को सुसंगठित करने के प्रयास भी होते रहे। वास्तव में त्रिपिटिक व अन्य बौद्ध साहित्य से हमें बुद्ध के जीवन, उपदेष अन्य बौद्ध भिक्षुओं के जीवन, विभिन्न सम्राटों के बौद्ध में

योगदान, तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दषा को समझने में सहायता मिलती है।

बौद्ध धर्म का प्रचार

बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार में बौद्ध भिक्षुओं, बौद्ध विहारों व बौद्व संघ का महत्वपूर्ण योगदान है। बौद्ध संघ एक महत्वपूर्ण संगठन था। बौद्व भिक्षु प्रज्ञ, प्रखर व उत्साही विद्वान थे। उन्होंने देष–विदेष में बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया विदेषों में भिक्षुओं के साथ–साथ व्यापारियों ने भी भारतीय संस्कृति और बौद्ध धर्म के प्रचार में काफी योगदान दिया। भारत के विभिन्न सम्राटों अषोक, कनिष्क, हर्षवर्धन, धर्मपाल आदि ने जिन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया था, ने देष–विदेष में बौद्ध धर्म के विकास और प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अषोक द्वारा बौद्ध धर्म अपनाना व प्रचार

बौद्व धर्म अपनाने से पूर्व ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था। कल्हण के अनुसार अषोक पूर्व में षिव भक्त था। उसके अन्दर अन्य राजाओं की तरह जैसे षिकार करना, माँस खाना आदि व्यवसन थे। लेकिन कलिंग युद्ध के बाद अषोक में अद्भूत परिवर्तन आये और उसने बौद्ध धर्म को अपना लिया उससे युद्ध न करने का निष्चय किया। उसने षिकार करना व माँस खाना भी बन्द कर दिया। दीपवंष और महावंष के अनुसार अषोक को उसके शासन के चौथे वर्ष निग्रोध नामक भिक्षु ने बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था। उसके बाद मोग्गालिपुत्तितिस्स के प्रभाव में आकर पूर्ण रूप से बौद्व हो गया। दिव्यवदान उसको बौद्व बनाने का श्रेय उपगुप्त को देता है। अषोक बौद्व धर्म अपनाने के बौद्व तीर्थों की यात्रा करने लगा। अषोक अपने शासन के दसवें वर्ष सर्वप्रथम बौद्ध गया की यात्रा पर गया। अपने अभिषेक के 20वें वर्ष लुम्बिनी ग्राम गया।

उसने लुम्बिनी ग्राम को कर मुक्त घोषि किया और केवल 1/8 भाग कर के रूप में लेने की घोषणा की। अषोक के बौद्ध होने का सबसे स्पष्ट और सबल प्रमाण भाब्रु (बैरात–राजस्थान) से प्राप्त लघु–षिला लेख है। अषोक स्पष्ट अपने को बुद्ध, धम्म और संघ के प्रति से समर्पित कहता है। अन्य अभिलेखों से भी इसकी पुष्टि होती है।

सर्वप्रथम अषोक ने 'धम्म यात्राएं' शुरू की। वह लुम्बिनी, गया, सारनाथ, श्रावस्ती और कुषीनगर आदि बौद्ध तीर्थ स्थलों की यात्राएं की। –रूमिन देई स्तम्भ लेख इसका प्रमाण है।

सम्राट अषोक के समय 251 बी.सी. में, पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ। 'कथावत्थु' नामक बौद्ध ग्रंथ की रचना हुई।

अषोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये 'धर्म महामात्र' नामक अधिकारियों की नियुक्ति की। इसका प्रमाण पांचवें षिलालेख से मिलता है।

अषोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिये विदेषों में प्रचारक भेजे। महारक्षित, महादेव, सोन, उत्तरा, महेन्द्र व संघ मित्रा प्रमुख है। इसके फलस्वरूप ही बौद्ध धर्म विष्व के अनेक देषों में लोकप्रिय हो गया। सम्राट अषोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये अनेक बौद्ध विहारों और स्तूपों का निर्माण करवाया तथा विभिन्न स्थानों पर अभिलेख खुदवाये ताकि जनता को बौद्ध धर्म की जानकारी प्राप्त हो सके।

अषोक का 'घम्म'

'घम्म' शब्द संस्कृत के 'धर्म' शब्द से बना है। इसमें सभी धर्मों के अच्छे सिद्धांतों का संग्रह है। ये नैतिक सिद्धांत ही अषोक के 'घम्म' का सार हैं। अषोक के 'घम्म' के विषय में विभिन्न इतिहासकारों में मतभेद है। कोई उसको बौद्ध धर्म तो कोई ब्राह्मण धर्म तो कोई इसको अषोक का आविष्कार मानता है।

षिलालेख–12 में कहा गया है कि बौद्ध धर्म ही सभी धर्मों का सार है। कलिंग विजय के बाद अशोक ने घम्म विजय की नीति अपनाई। अषोक का धर्म सार्वभौमिक धर्म था जो आज भी प्रासंगिक है। इसके प्रमुख सिद्धांत है :–

- अपने से बड़ो का सम्मान और छोटों के प्रति स्नेह।
- अपने माता–पिता व गुरु के प्रति।
- दासों व नौकरों से अच्छा व्यवहार करना।
- सदैव सत्य बोलना।
- आत्म–परीक्षण द्वारा दोषों को दूर करना।
- अहिंसा का पालन करना।
- सभी धर्मों का सम्मान करना।
- मनुष्य को पापरहित और निष्काम से कर्म करने चाहिये ताकि मृत्यु के बाद मोक्ष मिल सके।

घम्म का महत्व

अशोक विष्व इतिहास में प्रथम शासक है जिसने अपनी प्रजा के इह लौकिक व पारलौकिक कल्याण का प्रयास किया। उसने सत्य व अहिंसा के पालन पर बल दिया उसने लोगों को निष्काम व पाप रहित जीवन के लिये प्रेरित किया कलिंग युद्ध के बाद स्वयं भी इन सिद्धांत का पालन करके अपनी प्रजा को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। अषोक वे बौद्ध धर्म का जहाँ स्वयं पालन किया वहीं देष–विदेष के लोगों को भी प्रेरित किया। जनता ने उनकी प्रेरणा को ग्रहण किया। सभी धर्मों के लोग प्रेम व समन्वय से रहने लगे। अतः अषोक द्वारा किये गये जनप्रिय कार्यों के कारण ही उसे भारतीय इतिहास में अशोक महान कहा गया है।

निष्कर्ष

सम्राट अषोक का भारतीय इतिहास में अद्दितीय स्थान है। अषोक की महानता की पुष्टि अषोक के विभिन्न अभिलेख करते हैं। अषोक विष्व का प्रथम शासक है जिसने कलिंग में विजय प्राप्त के बाद भी विजय अभियान त्याग कर अहिंसा की नीति का पालन किया। अषोक ने इस युद्ध के बाद बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार में शेष जीवन लगा दिया। वर्तमान में बौद्ध धर्म विष्व के अनेक देषों में लोकप्रिय है। सम्राट अषोक 'घम्म' की षिक्षाएं वर्तमान समय में बहुत ही प्रासांगिक है। यदि इनका पालन किया जाये तो विष्व की सभी समस्याओं जैसे आतंकवाद, नक्सलवाद, तनाव तथा हिंसा से मुक्ति मिल सकती है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

संदर्भ सूची

क्र प्रो. डी.आर. भण्डारकर (1960), अषोक, एस. चन्द एण्ड कम्पनी, दिल्ली–जालन्धर।

क्र षिषिट कुमार पाण्डा (1999), पॉलिटिकल एण्ड कल्चरल हिस्ट्री ऑफ ओडिषा।

क्र कैलाष खन्ना (2010), प्राचीन भारत, अर्जुन पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ. 117।

क्र द्विजेन्द्र नारायण झा (2000), प्राचीन भारत, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पड़ताल, ग्रन्थ षिल्पी, दिल्ली, पृ. 77।

क्र डी.एन. झा (2005), प्राचीन भारत : एक रूपरेखा, मनोहर पब्लिषर्स, नई दिल्ली, पृ. 42।

क्र प्रशांत गौरव (2009) प्राचीन भारत, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, पृ. 174।

क्र मिथिला शरण पांडेय (2001) प्राचीन भारत की सामाजिक संस्थाऐं, ज्ञानदा प्रकाषन, नई दिल्ली।